



SHRI MADAN SINGH CHAUHAN

Shri Madan Singh Chauhan is a renowned Sufi singer from Chhattisgarh.

2. Born on 15th October, 1947, Shri Chauhan was drawn towards playing tabla at an early age. His early life was a witness to scarcity and financial strain. Nonetheless his avocation in music helped him in fulfilling his financial responsibilities. He has developed his own style in light music. He started his musical journey with tabla, but he soon found himself drawn to the art of singing.

3. Shri Chauhan has emerged as an institution/ gharana in classical music within a period of half a decade. All his life he has open-handedly distributed jewels of his knowledge and wisdom to people. Like a "Darvesh" he has been fountain of benevolence in divulging secrets of music. He is a recognized and established name amongst the listeners and viewers of All India radio and Doordarshan. The period 1975-80 saw his talent of music director who composed a long list of Chhattisgarhi songs. His music composed during those years still remains popular. Those were the days when Vividh Bharti radio station was most popular in India and Shri Chauhan's name became synonymous with Chhattisgarhi folk music.

4. As Shri Chauhan added years to his glorious life he started getting inclined towards Sufi music, especially Ghazals, Bhajan and Qawalli. In the last three decades his fame as a singer has spread in states like Chhattisgarh, Odisha, Delhi, Madhya Pradesh, and Maharashtra. He is a true follower of Kabir, Tulsi, Meera, Amir Khusroo, Baba Ghasidas. Massages of these saints are being spread through his music performance. Over the years his voice has echoed as offering in Urs the death anniversary of Sufi saint at his dargah and at "Pranpratishtha ceremony", the consecration of image of God in a Hindu temple.

5. Shri Chouhan has performed in many reputed programmes like National Centre for the Preforming Arts (NCPA), Mumbai and Sangeet Natya Academy, in memory of Begam Akhtar at Ahmedabad. He is often invited by Shri Shirdi Sai Sansthan to present the Bhajans and sufi Music at Sai Darbar. Hundreds of students every year get training and deep knowledge of Indian classical music and sugam sangeet at his home without any monetary charges. His music therapy gave relief to those drug addict young boys, who were not ready to listen even to their parents and gradually some of those addict came out of their habits. Now they are learning to play music instruments.

6. Shri Madan Chauhan is a recipient of numerous awards and honour including Ramchandra Deshmukh Bahumat Samman given by Hon. Governor of Chhattisgarh, the most prestigious Chakradhar Samman State Awards of Chhattisgarh by Honorable President of India, Shri Ramnath Kovind.





श्री मदन सिंह चौहान

श्री मदन सिंह चौहान छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध सूफी गायक हैं।

2. 15 अक्टूबर, 1947 को जन्मे, श्री चौहान की कम उम्र में ही तबलावादन के प्रति रुचि जाग्रत हो गई थी। उनका शुरुआती जीवन अभाव और वित्तीय तंगी में बीता। इसके बावजूद, संगीत में उनकी प्रगति ने जिम्मेदारियों को पूरा करने में उनकी मदद की। उन्होंने सुगम संगीत में अपनी खुद की एक शैली विकसित की है। उन्होंने तबले के साथ अपनी संगीत यात्रा शुरू की, लेकिन जल्द ही गायन की ओर मुड़ गए।

3. श्री चौहान आधे दशक के भीतर ही शास्त्रीय संगीत की एक संस्था/घराने के तौर पर उभरे हैं। उन्होंने जीवनभर अपना ज्ञान और विद्या खुले दिल से लोगों में बांटी है। एक ''दरवेश'' की तरह वह संगीत के अबूझ पहलुओं को अभिव्यक्त करने में आगे रहे हैं। वह ऑल इंडिया रेडियो और दूरदर्शन के श्रोताओं और दर्शकों के बीच एक जाना–पहचाना और स्थापित नाम हैं। 1975–80 के दौरान, उन्होंने संगीत निर्देशक के रूप में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए, बहुत सारे छत्तीसगढ़ी गीतों को संगीतबद्ध किया। उन वर्षों के दौरान रचा गया उनका संगीत आज भी लोकप्रिय है। उन दिनों भारत में विविध भारती रेडियो स्टेशन सबसे लोकप्रिय था और श्री चौहान का नाम छत्तीसगढ़ी लोक संगीत का पर्याय बन गया था।

4. श्री चौहान के शानदार जीवन में उस समय और भी उपलब्धियां जुड़ गईं जब उनका झुकाव सूफी संगीत, विशेषकर गजल, भजन और कव्वाली की ओर हुआ। पिछले तीन दशकों में एक गायक के रूप में उनकी ख्याति छत्तीसगढ़, ओडिशा, दिल्ली, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में फैल गई है। वह कबीर, तुलसी, मीरा, अमीर खुसरो, बाबा घासीदास के सच्चे अनुयायी हैं। वह संगीत के द्वारा इन संतों का संदेश लोगों तक पहुंचा रहे हैं। वर्षों से उनकी आवाज सूफी संतों के उर्स यानी पुण्यतिथि पर उनकी दरगाहों और हिंदू मंदिरों में भगवान के विग्रह के महाभिषेक अर्थात ''प्राणप्रतिष्ठा समारोह'' में प्रार्थना के रूप में गूँजती रही है।

5. श्री चौहान ने नेशनल सेंटर फॉर परफॉर्मिंग आर्ट्स (एनसीपीए), मुंबई और अहमदाबाद में बेगम अख्तर की स्मृति में नेशनल संगीत नाट्य अकादमी के प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में प्रस्तुतियां दी है। उन्हें समय–समय पर श्री शिरडीसाईं संस्थान द्वारा साईं दरबार में भजन और सूफी संगीत पेश करने के लिए आमंत्रित किया जाता है। हर साल सैकड़ों छात्र बिना किसी शुल्क के उनके घर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत और सुगम संगीत का गहन प्रशिक्षण और ज्ञान प्राप्त करते हैं। उन्होंने संगीत के जरिए नशे के आदी ऐसे युवाओं की नशे की आदत छुड़ाई है जो अपने माता–पिता की भी बात सुनने के लिए तैयार नहीं थे। अब वे संगीत वाद्ययंत्र बजाना सीख रहे हैं।

6. श्री मदन चौहान ने अनेक पुरस्कार और सम्मान हासिल किए हैं, जिनमें छत्तीसगढ़ के राज्यपाल द्वारा प्रदत्त रामचंद्र देशमुख बहुमत सम्मान; भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द द्वारा छत्तीसगढ़ का सबसे प्रतिष्ठित चक्रधर सम्मान शामिल हैं।